सद्गुरु
तत्व बोध
SADGURU
TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 166

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 36
जुलाई – 2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूपूर्णिमा

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

भक्त भाविकों के लिए,

अंग्रेजी भाषा में एक कहावत है – **Everything that glitters is not gold** अर्थात हर चमकने वाली चीज सोना नही होती परन्तु आपकी स्वाभाविक वृत्ति प्रत्येक चमकने वाली चीज़ को सोना मानने वाली हो गई है इसलिए जब कोई भी आपके पास आकर सोने का पानी चढ़ाई हुई चीज़ दिखाकर आपको कहता है कि यह सोना है, इसे खरीद लो तो आप वह चीज़ तुरंत खरीदते हैं। **'गुरुमार्ग' भी आज इसी तरह से चल रहा है। कोई भी व्यक्ति केसरी रंग के वस्त्र पहनकर त्रिपुंड भस्म लगाकर दीक्षा देने का अधिकारी बन जाता है।** परन्तु ऐसे व्यक्तियों द्वारा अगर लोग दीक्षा लेते हैं तो उनको अपने जीवन के अंत तक भीख मांगनी पड़ती है और हमारे दीक्षा देने से लोगों के हाथों से हमेशा के लिए भिक्षापात्र जाकर उन्हें समृद्धि प्राप्त होती है। **गुरुमार्ग और अन्य मार्गों में यह फर्क है**!

क्या आप दीक्षा का अर्थ जानते है? **दीक्षा देना कितना कठिन है** यह क्या आपको मालूम है? किसी बीमार व्यक्ति का आॅपरेशन करते समय कितनी सावधानी बरतनी पड़ती है। किसी भी मामुली सी बीमारी का संसर्ग ना हो इसलिए खुद के संरक्षणार्थ वैद्यकिय शास्त्र के अनुसार डॉक्टरों को सावधान रहना आवश्यक होता है। जैसे कि मरीज के शरीर के जंतु सांस लेते समय शरीर में प्रवेश ना करें इसलिए डॉक्टरों को अपने नाक और मुँह पर कपड़ा (मास्क) बाँधना पड़ता है। मतलब मामूली सी बीमारी से खुद का बचाव करने के लिए इतना सावधान रहना पड़ता है तो आप विचार कीजिए कि **गुरुमार्ग में भक्तों के कर्म धोना कितना कठिन काम है क्योंकि आपके कर्म मतलब कैंसर है।** उन कर्मों को विमोचन द्वारा विमोचित करते समय उनका संक्रमण साधक में ना हो इसलिए कितने अधिक प्रमाण में और कितने प्रखर जंतुनाशक का उपयोग करना आवश्यक है!

दीक्षा देना इसका स्पष्टरूप से अर्थ इस प्रकार है– आपके अनेक पूर्वजन्म आपके इस आज के प्राप्त जन्म में समाए हुए हैं और ऐसा यह आपका प्राप्त जन्म 'गुरुदीक्षापरत्वे' इतना शुद्ध करके आपको देना होता

है कि आपके आगे के अनेक जन्मों तक आपमें किसी भी प्रकार की अशुद्धता ना रहे। यह क्रिया जिस माध्यम से 'गुरुशक्ति' द्वारा होती है उसे 'गुरुदीक्षा' कहते हैं। आज क्या हो रहा है? भक्त गुरु के सामने नारियल, वीड़ा और दक्षिणा रखकर गुरु के गले में माला पहनाता है और फिर गुरु 'तथास्तु' कहकर भक्त के सिर पर हाथ रखते हैं। इस तरह की केवल क्रिया से दीक्षा का आदान-प्रदान नही हो सकता।

गुरुकृपाशीर्वाद द्वारा गुरुदीक्षा प्राप्त होने से आपको प.पू. पंतमहाराज जी के निम्नलिखित पदों में बताई हुई अवस्था का लाभ प्राप्त होता है।

जन्मों जन्मी दत्त सद्‌गुरु मिळे जरी मजला।
प्रेमानंदे सहज येईन प्रेमासी भजला ।। धृ।।

यदि मेरे हर जन्म में मुझे श्री दत्त सद्‌गुरु मिलेंगे (कारणदीक्षा मिलने के बाद)तो
मैं प्रेम और आनंद से उन्हें प्रेमपूर्वक भजने सहजता से उनकी शक्ति के साथ आऊँगा।

अनेक योनी मीचि झालो। नाही गुरु विसरला।।
म्हणूनी ब्रह्मानंदे खेळता अवतार झाला ।। 1।।

मेरा यह जन्म मुझे अनेक योनियों से उत्क्रांत होकर बड़ी कठिनता से प्राप्त हुआ है जिसका मुझे स्मरण भी नहीं है तथा इस जन्म का महत्त्व मैं नहीं समझता लेकिन श्री गुरु को इन बातों का विस्मरण नहीं हुआ है इसलिए उनके साधन में जब मैं ब्रह्मानंद में खेलता हूँ तब उनकी शक्ति का अवतार मेरे अंदर होता है।

मागे पुढ़े आत्मा मीचि। नाही दूजा दिसला।।
ब्रह्मानंदे स्वरूप छंदे। दत्त पदी रमला।। 2।।

पूर्व जन्मों में तथा आने वाले अनेक जन्मों में मैं ही आत्मारूप में हूँ, दूसरा कोई नहीं है। यह आत्मा गुरुकृपा से दीक्षाऐं प्राप्त करने के बाद ब्रह्मानंद में श्री दत्तगुरु के स्वरूप की लगन में श्री दत्त चरणों में रम (मगन) गई है।

आपने अब तक काया, वाचा, मन इन तीन अवस्थाओं को एकरूप करके प्राप्त जीवन का सार्थक करने के लिए आदिदैनिक, आदिभौतिक और आध्यात्मिक मार्गों का अवलंबन किया है लेकिन आप उसमें सफल नहीं हुए है आपके हिस्से में केवल विफलता ही आई है। आखिर आप यहाँ 'गुरुमार्ग' में आए और **यहाँ गुरुकृपा से आपके काया, वाचा, मन को एकरूप किया है। अब इन माध्यमों द्वारा आपने अपने जीवन का सार्थक करना है और इसलिए आपको 'ॐकार साधना' यह 'गुरुमंत्र' दिया है। अब यह गुरुमंत्र जतन करना आपका कर्त्तव्य है।**

श्री गुरु ने आपको एक ही अक्षर का गुरुमंत्र दिया है जो आपको नित्य याद रहेगा। बहुत बार आपको यह अनुभव हुआ है कि आपको एक ही अक्षर याद आता है, उसके आगे या पीछे का याद नहीं आता। जैसे आपको किसी व्यक्ति के नाम का एक ही अक्षर याद आता है उसके आगे या पीछे का कुछ याद नहीं आता। इसीतरह **अगर आपको ॐ के आगे कुछ मंत्र लिखकर दिया तो तंत्र इस दृष्टि से आप यंत्र बन जाओगे** और इस जन्म के बाद जब आप फिर से जन्म लेकर आओगे तब क्या होगा? तब आप विचार करते रहोगे कि ॐ के आगे क्या मंत्र था? इसलिए आज आपको कारणदीक्षापरत्वे 'ॐ' यह गुरुमंत्र दिया है ताकि आपके आगे के जन्मों में आपको केवल ॐ याद आएगा और वाकई वह याद आता है।

'ॐ यह एक ही अक्षर याद रहना' इतनी साक्षात्कारी बाजु आपकी साधनापरत्वे आपमें सिद्ध हो गई तो आपके बारे में यह होगा–

सप्तवर्षे बाललीला खेळे नरहरी। ॐ काराविण मुखे शब्द न उच्चारी।।

अर्थात सात साल की उम्र तक श्री नरहरी यानी नरसिंह सरस्वती महाराज बाललीला करते हुए खेलते रहे लेकिन उन्होंने ॐ के अलावा दूसरे शब्द का उच्चार अपने मुँह से नहीं किया।

प.पू. श्रीपाद श्री वल्लभ जी ने प.पू. नरसिंह सरस्वती स्वामी की माता को एक **व्रत** बताया था और उन्होंने **श्रद्धा** से वह व्रत किया। उन्होंने **गुरुआज्ञा** का यथायोग्य पालन किया इसलिए प.पू. श्रीपाद श्री वल्लभ जी को ही नरसिंह

सरस्वती करके फिर से जन्म लेकर आना पड़ा। प.पू. श्रीपाद श्री वल्लभ जी के कृपाशीर्वाद का एहसास कैसे हुआ है? ''सप्त वर्षे बाललीला खेळे नरहरी। ॐ कारा विण मुखे शब्द न उच्चारी।'' यह अवस्था उन्हें जन्मतः प्राप्त थी।

ऐसी ये अवस्थाऐं दुर्लभ यानी प्राप्त करने के लिए कठिन नहीं होती। अगर आप सातत्य से (निरंतर) एक ही तत्व से एक ही विचार से और एक ही आचार से तथा एक ही गुरु के प्रति एकनिष्ठ रह सके तो आपके लिए जीवन में असाध्य ऐसा कुछ भी नहीं है।

एक क्रिश्चन गुरुबंधु ने सवाल पूछा – Please tell me, when we say Aum, we can speak through mind & through mouth also

Dada Ji - If you see, in every word, if you minutely observe, it is nothing but 'Aum'

Bhakt - Yes, but it should be through mind or mouth?

Dada Ji - Through anything, through whatever elements God has given. You can do Aumkar through eyes, or through any other organ. As you can write 'Aumkar' with the help of your 2 fingers, you can repeat it, feel it, smell it, you can see it. then your physical body becomes Aumkar fully. What is the process? I don't see you as Mr. so and so but I see you as 'Aumkar'. So automatically your physical tendency transforms to Aumkar. Why do you love me?

Bhakt - When you say Aumkar it feels good but when we say Aumkar it is not that good but when you say 'Aum' with us, our Aumkar becomes good (effective).
Dada Ji - Thats exactly right and that is what I am currently doing. To bring all of you to that particular level.

Bhakt - But that will take time.

Dada Ji - No.Bhakt - Because human mind is such that it is not focused.

Dada Ji - That happens when your mind is in your possession. But as long as your mind is in my possession, it won't happen.

Bhakt - Who introduced this word initially as 'Aum'

Dada Ji - God himself.

Bhakt - To whom?

Dada Ji - Through this atmosphere.

Bhakt - Then how you came to know?

Dada Ji - That is the secret of my life. As you are chief secretary and you keep some confidential files with you which you don't give to others, similarly this is my secret.

Abstract God is expressed in the word, 'Aumkar'.

आपको अपने जीवन की सार्थकता प्राप्त करने के लिए पोषक ऐसे **गुरुमार्ग** का लाभ हुआ है। गुरुमार्ग में सिद्ध और साध्य अवस्थाऐं प्राप्त करने के लिए आपके अनेक पूर्वजन्मों के तथा इस प्राप्त जन्म के दोषों के कारण अनेक अलग-अलग प्रकार की रूकावटे निर्माण होने वाली थीं इसलिए श्री गुरु ने उन सभी दोषों का प्रथम विमोचन किया है और वे **विमोचित दोष आपके प्राप्त जीवन की सार्थकता करने के लिए पोषक किए है। आपके जीवन की विमोचित हुई यह ऋणानुबंधों की अमानत फिर से उन्ही ऋणानुबंधों द्वारा उन पुराने विषयों में जाने के लिए कार्यान्वित ना हो इसलिए आपके दोषों को 'कारणदीक्षा' देकर आपके वे ऋणानुबंध फिर से आपकी देह में धारण कर दिए है।** मतलब आपके पहले के जो विषयपरत्वे ऋणानुबंध थे, उनके दोषों का विमोचन किया और अब वे विमोचित दोष फिर से उन्हीं विषयपरत्वे कार्य ना करें इसलिए उन्हें **'कारणदीक्षा'** देकर आपके ऋणानुबंधों को फिर से देह में धारण कर दिया है।

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है – मान लीजिए आप पर 5 साहूकारों का 500 रुपये का कर्जा है। यह कर्जा यानी ऋण चुकता करने के लिए आपको क्या करना पड़ेगा? आप हररोज मेहनत करके कमाए हुए पैसों से अपनी घर-गृहस्थी के लिए खर्च करने के बाद उन 5 साहूकारों का ऋण एक साथ चुकता नहीं कर सकते। जब तक आप उन पाँचों साहूकारों का ऋण चुकता नहीं करते तब तक वे साहूकार आपके सिर पर खड़े रहेंगे। अब अगर उन पाँचों साहूकारों का **कर्जा चुकता करने की जिम्मेदारी मैंने (वं. दादाजी ने) ली,** तो क्या होगा? आप उन साहूकारों के ऋण से मुक्त हो जाओगे और आपके ऋण के लिए मैं साक्षी (जिम्मेदार) हूँ इसलिए आपका और मेरा परिचय हो गया। मेरे आपको ऋणमुक्त करने के कारण अब **आप मुझे भूल नहीं सकते।** इसीतरह आपके पाँच ऋणानुबंधों के बारे में है। आपको अपने प्राप्त जीवन में इन ऋणानुबंधों का कर्त्तव्य करके स्वीकार करना होता है और उन्हें पूर्ण करना होता है। लेकिन आप अपने प्राप्त जीवन में इन ऋणानुबंधों की अदायगी नहीं कर सकते इसलिए **इन ऋणानुबंधों की जिम्मेदारी अब श्री गुरु ने ली है। इसके कारण आपके देवादिक, मातृपितृ, इतरेजन, जन्मजन्मांतर और जन्मकर्म ये सर्व ऋणानुबंध अब गुरुरूप हुए है। अब आप किसके ऋण में है? 'गुरुऋण ' में। आप गुरुऋण में है इसका अर्थ क्या है? अंत तक आपने अपनी वाणी द्वारा श्री गुरु का नामस्मरण करना है और अब इतना ही ऋण आप पर है।**

आप गुरुऋण में है इसकी कोई निशानी आपके पास होनी चाहिए या नहीं? जिस तरह जख्म ठीक होने के बाद वहाँ उस जख्म की निशानी रहती है वैसे ही अब **गुरुकृपाशीर्वाद से आपके जीवन की सार्थकता हुई है,** इसका एहसास होने की क्रिया आपके देहिक माध्यम में कहीं तो अस्तित्व में होनी चाहिए या नहीं? तो हाँ और वह निशानी **'कारणदीक्षा' के रूप में आपके ब्रह्मरंध्र में धारण कराई है। आप गुरुकृपाशीर्वाद के लिए पात्र हुए हैं** इतने ही एहसास के रूप में वह निशानी आपके जीवन में नहीं रहेगी। इसके बारे में आगे के काल में जो होगा वह इस प्रकार है – आप किसी मूर्तिकार से या बाजार से अपने इष्ट देवता की मूर्ति घर लेकर आते है तब क्या उस मूर्ति में देवत्व होता है? नहीं, **उस मूर्ति को देवता का केवल आकार होता है।** वो साकार कब होता है? आप उस मूर्ति के प्रति की अपनी सद्भावना नित्य व्यक्त करते रहे तो वह **मूर्ति साकार होकर 'देवरूप' होती है। इसीतरह श्री गुरु ने इस प्राप्त जीवन में आपको जीवनमुक्त किया है इसकी निशानी के रूप में यह कारणदीक्षा श्री गुरु की अदृश्य रूप में प्रतिमा है। इस प्रतिमा को यानी कारणदीक्षा को जब आप अपनी ॐकार साधना से हररोज अपने चिंतन में लाओगे तब यह कारणदीक्षा आपमें साकार होगी मतलब 'कारणदीक्षा' क्या है यह आपकी समझ में आएगा और तब आपके जीवन की सार्थकता होगी। यह सब जानना और समझना यही आपके प्राप्त जीवन का सार्थक है।**

एक भक्त ने सवाल पूछा – **ॐकार साधना का बीज हमारे ब्रह्मरंध्र में (आनंदमय कोष) अधिष्ठित किया है जब हम पुनश्च जन्म लेंगे तब क्या हम अन्नमय कोषपरत्वे जन्म लेंगे या ब्रह्मरंध्र में जो कारणदीक्षा अधिष्ठित की है उस कारणदीक्षापरत्वे जन्म लेंगे?** इसका जवाब इस प्रकार है – निसर्गतः जो जन्म उत्पत्ति होती है उसका **आरंभ अन्नमय कोष** से ही होता है। स्त्री गर्भ में पुरूष बीज की धारणा होने के बाद जब स्त्री बीज और पुरूष बीज एक होते है तब देह धारण होता है। माता ने सेवन किए हुए अन्न के रस द्वारा उस देह का पोषण होता है। फिर 9 महीने बाद आपका जन्म होता है। अब आपको कारणदीक्षा प्राप्त होने के बाद ऊपर पूछे गए सवाल के संदर्भ में यह जवाब है – **कारणदीक्षापरत्वे आपके ब्रह्मरंध्र में गुरुतत्व अधिष्ठित (स्थापित) किया है लेकिन क्या वह गुरुतत्व ब्रह्मरंध्र में ही रखा जाता है? तो नही, वह गुरुतत्व ॐकार साधना से न्यास द्वारा आपके नाभिस्थान तक प्रवाहित किया है इसलिए अब आपके अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनंदमय ये पाँचों कोष ॐकार रूप यानी गुरुरूप हुए है।** अब आपका अगला जन्म निसर्गतः **अन्नमय कोष** द्वारा ही होगा लेकिन आपके अगले जन्म में आपके अन्नमय कोष में खाने-पीने की इच्छा-वासनाओं के दोष ना रहकर आज आपके इस प्राप्त जन्म में आपमें धारण हुई दीक्षा सुप्त अवस्था में अस्तित्व में होगी। अगले जन्म में भी आपके पाँचों ऋणानुबंध अस्तित्व में होंगे परन्तु इस प्राप्त जन्म में **आपके माध्यम का विमोचन किया है** इसलिए जन्म के समय जो **पूर्वजन्म के दोष धारण होने की क्रिया होती है वह क्रिया अगले जन्म में आपमें नहीं होगी** और इसके कारण उस समय आपमें जो ऋणानुबंध होंगे उनमें केवल अनुकूलता ही होगी। अगर आपके ऋणानुबंधों में थोड़ी-सी प्रतिकूलता आ भी गई तो भी **आपके पाँचों कोषों में कारणदीक्षा धारण होने के कारण उन कोषों में उस प्रतिकूलता का निवारण करने का सामर्थ्य भी होगा!** आज आपके इस प्राप्त जन्म में आपके अन्नमय कोष में खाने-पीने की इच्छा-वासनाओं के कारण दोष था, आपके पाँच ऋणानुबंधों में से किसी भी एक ऋणानुबंध में प्रतिकूलता आती है तो पाँच स्थानों से उस प्रतिकूलता का निवारण करने के लिए उतना **सामर्थ्य आपके कोषों में नहीं था परन्तु अगले जन्म में वह आपको सुलभता से प्राप्त होगा।**

।। शुभं भवतु।।

सेवक